माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव*

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना था। इस शोध में शोधकर्ता ने क्षेत्र विशेष के विद्यार्थियों का चयन कर उनके मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का अवलोकन करना है जिसमें शोधकर्ता ने शहरी व ग्रामीण तथा कला एंव विज्ञान व छात्र एंव छात्राओं आदि सभी आधारों पर विद्यार्थियों में अन्तर पाया गया है।

प्रस्तावना

ईश्वर की बनाई इस सृष्टि की सबसे बड़ी और महान रचना मनुष्य है। शिक्षा मनुष्य के पास वह शक्ति है जो उसे धरती पर रहने वाले अन्य जीवों से पृथक करती है। जिस प्रकार मनुष्य ईश्वर की बनाई रचना है उसी प्रकार समाज मनुष्यों के परस्पर मिलने से बनता है। अतः समाज और मनुष्य का अस्तित्व एक दूसरे के बिना असम्भव है। मनुष्य और समाज के प्रत्येक क्रियाकलाप का इनका एक दूसरे पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पडता है। मानव का विकास छोटी अवस्था से ही होना प्रारम्भ हो जाता है मानव के विकास की प्रत्येक अवस्था का उसके जीवनकाल पर व्यापक प्रभाव पडता है।

प्राचीन समय से ही पूर्वजो के द्वारा बाल्यावस्था में बच्चों की शिक्षा पर मानसिक स्वास्थ्य का आचार व्यवहार इस प्रकार इन पर जोर दिया गया की उसके अन्दर ऑलौकिक शक्ति अदम्य उत्साह तथा अश्रान्त परिश्रम का अक्षम भण्डार उत्पन्न हो गया और इसी को उत्पन्न करने के लिए प्राचीन काल से ही बाल्यावस्था पर विशेष जोर (ध्यान) दिया जाने लगा।

बाल्यावस्था जीवन शोध की आधारशिलाएं है। इसलिए हमे बच्चों को मानसिक स्वास्थ्य के विकास के लिए गर्भावस्था से ही अपने कर्त्तव्य की और सावधान रहना परमावश्यक है। अतः हमें गर्भवती के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए जिससे इसकी मनोदशा उन्नत और पवित्र रहे। इसका प्रभाव गर्भस्थ पर सबसे अधिक पडेगा । जिससे उसका मानसिक व शारीरिक विकास अधिक अच्छा होगा। यदि हमारे दूर्व्यवहार से वह क्रुद्ध होगी या उसके विचारों में किसी प्रकार का कालुष आ जायेगा तो उसके गर्भज्य अगं पर इन सब का सोलह आने 100: प्रभाव पडेगा। जो माता–पिता क्रोधी है या अन्य दोषो से दूषित है तो उनकी संतान भी वैसी होगी या उनका मानसिक स्वास्थ्य बिगड जायेगा और वह हर क्षेत्र में पिछडते रहेंगे।

गर्भावस्था से मृत्यु तक व्यक्ति में निरन्तर मानसिक व शारीरिक परिवर्तन होता रहता है। वह कभी स्थायी रूप में नही होता। बाल्यावस्था बहुत तेजी से विकास करती हुई अवस्था होती है। किसी भी बालक की बाल्यावस्था में जितनी अधिक अच्छि तरह से उसके प्रत्येक भाग पर ध्यान दिया जाए चाहें वह मानसिक हो या शारीरिक सांवेगिक या सामाजिक हो। इन सभी अवस्थाओं में सबसे अधिक परिपक्वता बाल्यावस्था में ही आती है।

सभी मनोवैज्ञानिको के विचार से वैसे तो सभी अवस्थाओं में मानसिक, शारीरिक, सांवेगिक विकास होता है। लेकिन यह विकास किशोरावस्था तथा बाल्यावस्था में सबसे अधिक होता हे। जब बालक व बालिकाये अध्ययन करते हुए माध्यमिक स्तर तक पहुँच जाते है तो वे सबसे महत्वपूर्ण काल में कदम रखते है। वह बाल्यावस्था व किशोरावस्था की मध्य की अवस्था होती है। जिसमें उनके विकास में शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के साथ–साथ समाज, विद्यालय, कक्षा, साथी, घर–परिवार आदि का प्रभाव पडता है।

*प्राचार्य, आर0 पी0 एस0 कॉलेज ऑफ एजूकेशन खोड़, अटेली मण्ड़ी, महेन्द्रगढ. (हरियाणा)

इस काल में बालक जिन व्यक्तिगत, सामाजिक और शिक्षा संबंधी आदतों व्यवहारों तथा रूचियों एवं इच्छाओं के प्रतिरूपों का निर्माण कर लेता है। उनको रूपान्तरित करना सरल नही होता है। इस अवस्था को बालक की निर्माणकारी अवस्था कहते है।

समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन ''

शोध के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं

1. माध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में संकाय भिन्नता का सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य लिंग भिन्नता का सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में क्षेत्र भिन्नता का सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तकनीकी शब्दो का परिभाषीकरण

माध्यमिक स्तरः— माध्यमिक स्तर या कक्षा शैक्षिक संरचना की मध्यस्थता की कडी है। जिसके नीचे प्रारम्भिक शिक्षा तथा ऊपर उच्च माध्यमिक शिक्षा और महाविद्यालयी शिक्षा होती है। इसमें 10 वर्ष से 16 वर्ष के बालक–बालिकाऐं शिक्षा प्राप्त करते है। इसके अन्तर्गत कक्षा 6 से 10 वीं तक की शिक्षा दी जाती है।

बालकः— उपरोक्त शोध में छात्र–छात्राओं (बालकों) से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के उन सभी बालकों से है जो कि कक्षा 6 से 10 वीं तक अध्ययनरत है। शोध के लिए 10 वीं के विद्यार्थियों को लिया गया है।

मानसिक स्वास्थ्यः— मानसिक स्वास्थ्य से अभिप्राय ज्ञान भण्डार में वृद्धि एवं उसके उपयोग से है। मानसिक शक्तियों के उदय तथा वातावरण के प्रति समायोजन की क्षमता का नाम मानसिक स्वास्थ्य है। मानसिक स्वास्थ्य में अवबोध, स्मरण, ध्यान केन्द्रित करना, निरीक्षण, विचार, तर्क, समस्या समाधान, चेतना आदि शक्तियॉ आती हे।

शोध का परिसीमन

समय श्रम व सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अनुसंधान की निम्नलिखित परिसीमायें है।

1. बालक–बालिकाओं को केवल 16 वर्ष तक सीमित रखा गया है।
2. यह अध्ययन 16 वर्ष तक के केवल 100 बालक तथा 100 बालिकाओं पर ही सीमित रखा गया है।
3. इस समस्या को अलवर जिले के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों तक ही सीमित रखा गया है।
4. इस अध्ययन में शोधार्थी द्वारा राजकीय एवं निजि विद्यालयों के माध्यममिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि से अध्ययन किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन के लिये जनसंख्या का निर्धारण अलवर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में पढने वाले छात्रों को लिया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन का न्यादर्श इस प्रकार है

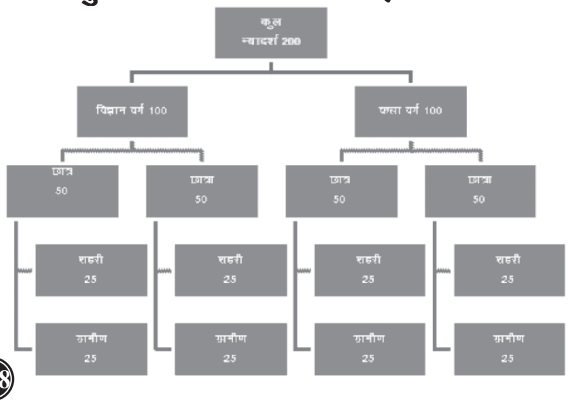

शोध उपकरण

अध्ययनकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन के सम्पादन करने हेतु MHB-ss मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण (डॉ अरुण कुमार सिंह एवं डॉ अल्पना संगुप्ता द्वारा निर्मित) का प्रयोग किया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

1. मध्यमान
2. प्रमाणिक विचलन या मानक विचलन
3. 'टी' अनुपात

आंकडों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1:– माध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में संकाय भिन्नता का सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी सं. 4.7

क्र.सं.	समूह	कुल संख्या N= 200	मध्यमान	मानक विचलन	''टी'' मूल्य
1.	कला वर्ग	100	79.97	8.42	10.10
2.	विज्ञान वर्ग	100	91.53	7.76	

स्वतंत्रता के अंश 198हेतु आवश्यक 'टी' का तालिका मान

0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.97

0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.60

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि कला वर्ग के विद्यार्थियों व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य से प्राप्त मध्यमान 79.97 ढ 91.53 के बीच 'टी' मूल्य 10.10 प्राप्त हुआ यह 'टी' मूल्य 0.05/0.01 स्तर पर 1.97./2.60 से अधिक है, जो यह प्रदर्शित करता है कि कला वर्ग के विद्यार्थियों व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया जाता है।''

अतः परिकल्पना '' कला वर्ग के विद्यार्थियों व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है''अस्वीकृत की जाती है।

माध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी आंकडों को प्रदर्शित करने वाला आरेख

आरेख संख्या 4.1

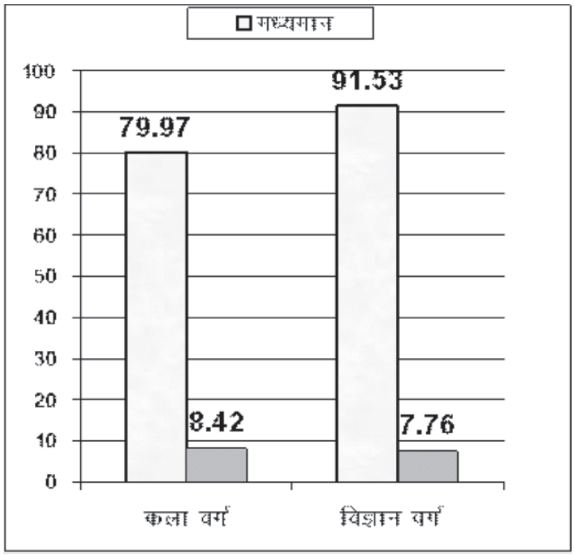

परिकल्पना 2 :– माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य लिंग भिन्नता का सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी सं. 4.2

क्र.सं.	समूह	कुल संख्या छात्र 200	मध्यमान	मानक विचलन	''टी'' मूल्य
1.	छात्र	100	83.27	8.69	3.64
2.	छात्रा	100	88.23	10.51	

स्वतंत्रता के अंश 198हेतु आवश्यक 'टी' का तालिका मान

0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.97

0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.60

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य से प्राप्त मध्यमान .83.27ढ 88.23 के बीच 'टी' मूल्य 3.64 प्राप्त हुआ यह 'टी' मूल्य 0.05 / 0.01 स्तर पर 1.97 / 2.60 से अधिक है, जो यह प्रदर्शित करता है कि छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया जाता है।''

अतः परिकल्पना '' माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' अस्वीकृत की जाती है।

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य लिंग भिन्नता से संबंधी आंकडों को प्रदर्शित करने वाला आरेख आरेख संख्या 4.2

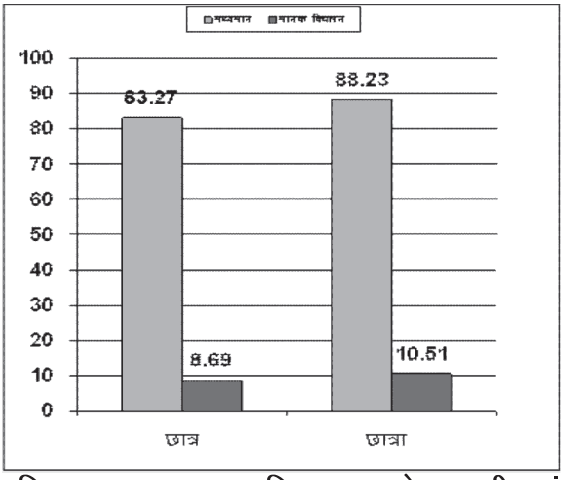

परिकल्पना 3 :– माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में क्षेत्र भिन्नता का सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी सं. 4.3

क्र.सं.	समूह	कुल संख्या N=200	मध्यमान	मानक विचलन	''टी'' मूल्य
1.	शहरी विद्यालय के विद्यार्थी	100	83.67	9.96	3.02
2.	ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थी	100	87.83	9.51	

स्वतंत्रता के अंश हेतु आवश्यक 'टी' का तालिका मान

0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.97

0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.60

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शहरी विद्यालय के विद्यार्थी एवं ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य से प्राप्त मध्यमान 83. 67ढ 87.83 के बीच 'टी' मूल्य 3.02 प्राप्त हुआ यह 'टी' मूल्य 0.05 / 0.01 स्तर पर 1.97 / .2.60से अधिक. है, जो यह प्रदर्शित करता है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया जाता है।''

अतः परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' अस्वीकृत की जाती है।

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में क्षेत्र भिन्नता संबंधी आंकडों को प्रदर्शित करने वाला आरेख आरेख संख्या 4

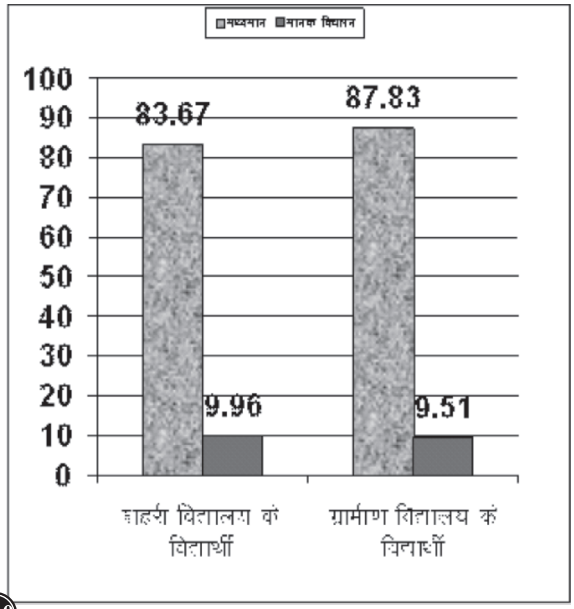

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त होते हैं–

1. शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों में क्षेत्र भिन्नता के आधार पर अधिक पाया जाता है।
2. छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में मानसिक स्वास्थ्य अधिक अच्छा पाया जाता है।
3. कला वर्ग के विद्यार्थियों में विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा मानसिक स्वास्थ्य अधिक पाया जाता है।

संदर्भ

कुलश्रेश्ठ एस. पी. 2007, एजुकेशन साइकोलॉजी, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।

सरीन डा. रामपाल शर्मा डा. ओ. पी., 2008 शैक्षिक अनुसंधान एंव सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–7

राय, पारस नाथ 1999 अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।

शर्मा आर. ए. 2012 शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो,मेरठ।